रे पिरीयम, मंगां सो लाड करे।
हेडी किजकां मुदसे, खिलंदडी लगां गरे।। १ ।।

हे प्रीतम! मैं आपसे प्यार करके मांगती हूं कि मेरे साथ कुछ ऐसा करो कि मैं हंसती हुई आपके गले से आकर लग जाऊं।

जगाइए इलम से, विच सोणे विहारे।
निद्रडी आई जा हुकमें, जागां कींय करे।। २ ।।

आप इस झूठे संसार में बिठाकर अपनी जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से जगाते हो। जो फरामोशी (नींद) आपके हुकम से आई है, उससे मैं कैसे जागूं?

हे अंगडा सभ सोंणेजा, असल कूडा जे।
जोर करियां घणी परे, त कीं न पुजे तो के।। ३ ।।

मेरे सभी अंग सपने के हैं और सभी झूठे हैं। मैं बहुत ताकत लगाती हूं फिर भी आप तक नहीं पहुंच पाती।

इलमें न रखी कां सक, मूंजो हल्ले न सोंणे में।
संगडो डेखारे बेसक, आंऊं लाड करियां के से।। ४ ।।

आपकी तारतम वाणी ने कोई संशय नहीं रखा, परन्तु स्वप्न में मेरा कुछ चलता ही नहीं। आपने अपनी बेशक पहचान कराकर सम्बन्ध बता दिया कि मैं आपकी अंगना हूं। अब मैं किससे लाड़ करूं?

हे पसां सभ सोंणे में, आंऊं विच जिमी आसमान।
से न्हाए चौडे तबके, मूंजो संगडो तूं सुभान।। ५ ।।

इस सपने के संसार में आसमान और जमीन के बीच जो देखती हूं तो चौदह लोक में, हे मेरे धनी! आप दिखाई नहीं देते।

मूं धणी मूं हितई, ओडो डेखारे इलम।
हथ घुरींदे न लहां, न डिसां नेंणे खसम।। ६ ।।

हे मेरे धनी! आपके इलम ने मुझे खेल में भी आपके पास दिखलाया है। मैं स्वयं आपसे से मांगती हूं तो भी आपको नहीं पाती हूं (नहीं मिलती हूं) और न ही आपको नजर से देख सकती हूं।

हे इलम एहेडो आइयो, जेहेडो आइए तूं।
इलम सोंणे में को करे, मूं में रही न मूं।। ७ ।।

आपका ज्ञान भी ऐसा है जैसे आप हैं। जब मेरे में अहंभाव ही नहीं रह गया, तो आपका ज्ञान भी संसार में क्या करे?

रांद सभेई निद्रजी, जीरया मर्‍या वजन।
सोंणे अंगडा असांहिजा, तोके कीं न पुजन।। ८ ।।

संसार में जीने-मरने का खेल माया का है। हमारे तन भी सपने के हैं, जो आप तक नहीं पहुंच सकते हैं।

Nijanand App

हे सोंणो तोहिजे हथ में, तो हथ निद्र इलम।
तोहिजा सुख सोंणे या जागंदे, सभ हथ तोहिजे हुकम।। ९ ।।

यह सपना भी आपके हाथ में है। आपके हाथ में ही यह फरामोशी और ज्ञान है। अब आपके सभी सुख सपने में मिले या जागृत अवस्था में। सब आपके हुकम के हाथ में है।

हेडी गाल अची लगी, जाणे थो सभ तूं।
तो पांणे पांण डेखारयो हिकडो, आंऊं त पसां तो अडूं।। १० ।।

अब बात यहां आकर लगी है। यह बात आप जानते हैं, क्योंकि आपने अपने को ही सिर्फ बताया है, इसलिए मैं आपकी तरफ देख रही हूं।

कीं घुरां आंऊं के कणां, ओडो न अचे तूं।
बिओ को न पसां थी कितईं, आंऊं विच आसमाने भूं।। ११ ।।

अब मैं कैसे मांगूं? किससे मांगूं? जब तक पास नहीं आ जाते। आसमान और जमीन के बीच में मुझे कोई दूसरा कहीं दिखाई ही नहीं देता।

बोलां थी तो बोलाई, तो अडां पसाइए तूं।
निद्र इलम या इस्क, तो डिंनो अचे मूं।। १२ ।।

आप बुलवाते हो तो बोलती हूं। अपनी ओर दिखाते हो तो देखती हूं। नींद हो, इलम हो या इश्क हो, सब आपके देने से ही मुझे मिलते हैं।

जे चओ त बोलियां, न तां मांठ करे रहां।
जे उपाओ था दिल में, से तो रे के के चुआं।। १३ ।।

जो आप कहो वह मैं बोलती हूं, नहीं तो चुप रह जाती हूं। जो आप मेरे दिल में पैदा कराते हैं, वह आपके बिना किससे कहूं?

हंद न रख्यो किंतईं, जे से करियां गाल।
तो डेखारी डिस तोहिजी, से लखे तोहिजा भाल।। १४ ।।

आपने कहीं ठिकाना नहीं रखा, जिससे मैं बात करूं? आपने अपने घर की पहचान कराई, जिसका मैं आपके लाखों एहसान मानती हूं।

मूं अवगुण डिठां पांहिजा, गुण डिठम पिरम।
से बेओ जमारो गेंदे, उमेद ए रियम।। १५ ।।

मैंने अपने अवगुणों को देखा और आपके गुणों को देखा। आपके गुणों को गाते-गाते मेरी उम्र बीत गई और एक चाहना बनी रह गई।

तो उमेदूं पुजाइयूं, जे जो न्हाए सुमार।
हे तो पांण मंगाइए, तूंही डियन हार।। १६ ।।

आपने मेरी जितनी चाहनाएं पूर्ण की हैं वह बेशुमार है। यह तो आप मंगवाते हो तो मांगती हूं। आप ही देने वाले हैं।

Nijanand App

लाड कोड तो हथमें, संग या सांजाए।
जडे तडे तूंही डिए, बेओ कोए न कितईं आए।। १७ ।।

हमारे लाड़ और खुशी सब आपके हाथ में है। इसकी जानकारी और पहचान आप कराते हैं। जब कभी देते हो तो आप ही देते हो। दूसरा कोई कहीं है ही नहीं।

जडे आंणीने ओडडा, तडे पेरई डिंने लज्जत।
हे डिंनो अचे सभ तोहिजो, मूंके बुझाइए सौ भत।। १८ ।।

जब आप अपने पास बुलाते हैं, तो पहले से ही आनन्द आने लगता है। यह सब आप के देने से आता है। यह मुझे सब तरह से समझा दिया है।

जीं बुझाइए मूंहके, डे तूं मेहेर करे।
जे न घुरां तो कंने, त को आए बेओ परे।। १९ ।।

जैसा आपने मुझे समझाया है, आप मुझे मेहर करके दें। यदि आपसे मैं न मांगू, तो दूसरा कौन है जिससे मांगू?

ए तो सिखाई मूं सिखई, को न घुरां धणी गरे।
मूं थेयूं हजारूं हुजतूं, जडे तो डिंनो संग करे।। २० ।।

जो आपने सिखाया तो मैं सीखी कि अपने धनी से क्यों नही मांगू। मेरी हजारों चाहनाएं थीं जो आपने मुझे पहचान कराकर पूरी दीं।

संगडो डिठम बेसक, मंझ तोहिजे इलम।
त चुआं थी हुजतूं, जे चाइए थो खसम।। २१ ।।

मैंने अपने सम्बन्ध को आपके इलम से तेहकीक कर पहचान लिया। इसलिए दावे के साथ कहती हूं। जो आप कहलवाते हो।

हांणे चाह डिए थो दिलके, त दिल करे थो चाह।
अपार मिठाइयूं तोहिज्यूं, जे डिंने पाण हथांए।। २२ ।।

जब आप हमारे दिल में चाहना पैदा कराते हो, तो हमारा दिल चाहना करता है। आपकी वाणी में बेशुमार सुख हैं, जिसे आप अपने हाथ से देते हैं।

महामत चोए मेहेबूबजी, ही सुणज दिल धरे।
हांणे हेडी डिजंम हिमंत, जीं लगी रहां गरे।। २३ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेरे लाड़ले धनी! यह बात दिल से सुन लो। अब ऐसी ताकत दो कि मैं आपके गले से चिपटी रहूं।

।। प्रकरण ।। ४ ।। चौपाई ।। १२९ ।।

श्री देवचन्दजी मिलाप विछोहा

सांगाए थिंदम धाम संगजी, तडे घुरंदिस लाड करे।
दम न छडियां तोहके, लगी रहां गरे।। १ ।।

जब परमधाम के सम्बन्ध की पहचान हो गई तब मैं आपसे लाड़ (प्यार) करके मांगती हूं। अब आपको एक पल के लिए नहीं छोड़ूंगी। गले से चिपटी रहूंगी।

Nijanand App